I J R S S I S, Spl Issue (III), July-2020 : 274-278
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 8268 & 2347-8209 (P)
Original Article

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES
© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

वर्तमान समय में संगीत के अर्थशास्त्र का बदलता स्वरूप

S. Shrivastav* and Ramshankar
Allahabad Degree College, Prayagraj.
Kashi Hindu Vishwavidyalaya, Varanasi.

सारांश :

किसी भी देश के सामाजिक सांस्कृतिक और धार्मिक परिवर्तन आज की आर्थिक स्थिति उस देश की कलाकृति में स्पष्ट प्रतिबिंबित होता है। समाज में व्याप्त सामूहिक व्यवस्था और प्रवृत्ति के साथ–साथ आर्थिक दृष्टिकोण भी कला के संरक्षण में विशेष महत्व रखता है। विशेषतः जब कलाकार व शिक्षक अपनी कला को उदर पोषण का माध्यम बनाए। संगीत में प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों ही रूपों से इस कला में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। इसके लिए सबसे जरूरी यह है कि बाल्यावस्था से बहुआयामी संगीत कला के प्रशिक्षण हेतु वांछित व्यवस्थाएं होनी चाहिए क्योंकि यह मानव जीवन की सर्वाधिक उर्वर अवस्था है। इसी अवस्था में मजबूत हुई संगीत कला की अभिरुचि आने वाले समय में कला परिष्कार व उससे प्राप्त होने वाले रोजगार माध्यमों को प्राप्त किया जा सकता है।

बीजशब्द : वर्तमान समय, संगीत, अर्थशास्त्र, बदलाव, स्वरूप

उद्देश्य–

संगीत कला से जुड़कर भारत जैसे विशाल देश के बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार प्रदान करने के लिए बाल्यावस्था से ही संगीत शिक्षण प्रशिक्षण की बहुआयामी व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि आज का विद्यार्थी ही कल का कलाकार, संगीत शिक्षक, संगीत लेखक, संगीत समीक्षक, संगीत आलोचक या संगीत निर्देशक इत्यादि होगा और अपनी किसी भी प्रतिभा का लाभ उठाते हुए संगीत जगत को समृद्ध करने में अपना पूर्ण योगदान देगा और अपनी आजीविका को चलाने में भी पूर्ण रूप से सक्षम होगा।

प्रस्तावना–

संगीत का अर्थशास्त्र से वैसे ही संबंध है जैसे अन्य कलाओं का अर्थशास्त्र से अर्थात अर्थशास्त्र एक ऐसा विज्ञान है जो आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है एवं धन का विवेचन करता है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अधिक से अधिक धनार्जन करना चाहता है, जिसमें से संगीत कला भी एक ऐसा विषय है जिसकी शिक्षा प्राप्त करने के बाद मनुष्य धनोपार्जन करके अपनी जीविका सरलता पूर्वक चला सकता है।

व्यक्ति व समाज से ऊपर उठकर संगीत शिक्षा संस्कृति एवं सभ्यता को भी संरक्षण प्रदान करती है। पीढ़ी दर पीढ़ी वर्षों की परंपरा में उपलब्ध संगीत का स्वरूप सांगीतिक व सांस्कृतिक

परंपराओं के लिए धरोहर स्वरूप होता है क्योंकि उन्हीं के माध्यम से संस्कृति व सभ्यता का ज्ञान आगे आने वाली पीढ़ियों को उपलब्ध होता है और यही संगीत भविष्य में निर्मित होने वाले संगीत का प्रेरणास्रोत बनता है आज संगीत की शिक्षा विद्यालयों महाविद्यालयों विश्वविद्यालयों में संपन्न हो रही है अतः सर्व सुलभ होने के बाद भी संगीत के आंतरिक तत्वो को उभरने का अवसर नहीं मिल पा रहा है संगीत शिक्षा का उद्देश्य केवल मानव जीवन में रस का संचार करना या संगीत शिक्षार्थियों को ज्ञान देना ही नहीं बल्कि उन्हें मानसिक रूप से उन्नत तथा उत्कृष्ट बनाना है तथा संगीत शिक्षा प्राप्त कर उसे व्यावसायिक रूप में अपनाते हुए जीवन निर्वाह करना है। जीवन को कलात्मक सुरुचिपूर्ण बनाने, सुसंस्कृत बनाने के लिए जनसाधारण में संगीत के प्रति प्रेम व आत्म चेतना की जागृति उत्पन्न करना ही संगीत शिक्षा का लक्ष्य है क्योंकि इसके माध्यम से समाज का मानसिक व नैतिक उत्थान संभव है।

वर्तमान समय में यह मान्यता दृढ़ होती जा रही है कि शिक्षा का उद्देश्य विशुद्ध ज्ञानार्जन मात्र ना होकर धनार्जन भी होना चाहिए। विद्या अर्थकारी हो यानी विद्या प्राप्त करने के उपरांत विद्यार्थियों को समुचित व्यवसाय की प्राप्ति हो। संगीत शिक्षण में भी इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है। आज संगीत शिक्षा के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा वर्ग कुछ कठोर चुनौतियों का सामना कर रहा है। सामाजिक उत्तरदायित्वों को निभाने की दिशा में कई चुनौतियां बाध्य हो रही हैं। सामाजिक उत्तरदायित्वों के अंतर्गत विशेष रूप से आर्थिक स्वावलंबन की योग्यता अर्जित करना आज संगीत शिक्षा की सर्वोच्च मांग है और इसकी पूर्ति हेतु संगीत विषय को व्यवसाय उन्मुख बनाना भी आवश्यक है। जीवन रूपी नौका को संसार रूपी सागर से पार उतारने के लिए किसी न किसी रूप में व्यवसाय तो आवश्यक है ही परंतु उस व्यवसाय को अपने स्वार्थ बस जीवन यापन के लिए नहीं बल्कि उसे कला व समाज की उन्नति के उद्देश्य से भी अपनाया जाना श्रेयस्कर है। संप्रेषण, टेलीविजन और प्रचार प्रसार के माध्यमों द्वारा संगीत के क्षेत्र में विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों का रास्ता खुला है। आज फलते–फूलते संगीत उद्योग ने देश विदेश में अपना एक निजी स्थान बना लिया है। यदि कोई गाना चाहता है या कोई वाद्य बजाना चाहता है संगीत की धुन या ऑर्केस्ट्रा का संचालन करता है और संगीत विषय को पूर्णकालिक कैरियर बनाना चाहता है तो किसी संगीत विद्वान या कलाकार से संगीत सीखकर या संगीत की शिक्षा प्राप्त कर अपनी प्रतिभा को जागृत कर सफल हो सकता है। आधुनिक संगीत शिक्षा से यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी संगीत संबंधी सभी व्यावसायिक क्षेत्रों में आगे बढ़ें और अपनी कला का प्रदर्शन भी करें।

वर्तमान समय में संगीत का विषय के रूप में विद्यालयों, शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों में आ जाने से अनेक कलाकार शिक्षक कार्यरत हैं, जो

संगीत शिक्षण की सेवा में लीन होकर जीविकोपार्जन कर रहे हैं। वर्तमान समय में संगीत शिक्षण संस्थाओं में संगीत एक सम्मानित व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है। प्राथमिक शिक्षा से संबंधित विद्यालयों से विश्वविद्यालयों तक की शिक्षण संस्थाओं में संगीत के विद्यार्थियों को शिक्षक के रूप में रोजगार प्राप्त हो रहे हैं।

घरानेदार संगीत शिक्षा पद्धति, संस्थागत शिक्षण पद्धति तथा विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा पद्धति के साथ ही संगीत शिक्षकों का एक वर्ग और भी विकसित हुआ इन सभी प्रकार के संगीत शिक्षकों का विभाजन इस प्रकार हो सकता है–

- घरानेदार संगीत शिक्षक–जो अपनी पारंपरिक गायन वादन प्रणाली को सुरक्षित रखने हेतु घरानेदार संगीत की शिक्षा देते हैं।
- प्रचारक संगीत शिक्षक–जो समाज में संगीत को विशेष महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कराने की दृष्टि से तथा संगीत का प्रचार प्रसार करने की दृष्टि से संगीत शिक्षा देते हैं।
- विद्यालयीय तथा विश्वविद्यालयीय संगीत शिक्षक–जो अध्यापक नौकरी तथा व्यवसाय हेतु उपाधियां प्राप्त कर विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में संगीत की शिक्षा देते हैं।
- स्वतंत्र व्यवसायी संगीत शिक्षक–इन तीनों के अतिरिक्त एक और वर्ग भी है जिसे स्वतंत्र व्यवसाय संगीत शिक्षक कहते हैं। बीसवीं सदी के प्रारंभ में संगीत प्रेमियों ने संगीत क्षेत्र में खुद को प्रस्थापित करने और कलाकार बनने हेतु घरानेदार श्रेष्ठ गायकों से अत्यंत परिश्रम पूर्वक गायन विद्या ग्रहण की किन्तु केवल संगीत की शिक्षा देना ही इनका पेशा नहीं था परंतु जो संगीतज्ञ योग्य होने पर भी पर्याप्त ख्याति और धन अर्जित नहीं कर पाते थे उन्हें अपने जीवन निर्वाह के लिए संगीत शिक्षा का व्यवसाय अपनाना पड़ा और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कहीं–कहीं इन्हें स्वयं लोगों के घर घर जाकर संगीत शिक्षा भी प्रदान करनी पड़ती।

शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थियों के विकास के लिए विषय की महत्ता को प्रदर्शित करें। यह भी माना जाता है कि जहां वह विशिष्ट प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को संगीत के निरंतर कार्यशील क्षेत्रों को लक्ष्य बनाने के लिए प्रेरित करें वहीं उनमें विषय पर अधिकार पूर्वक नेतृत्व का विकास करने के लिए उन्हें संगीत शिक्षा प्रदान करने का धैर्य भी प्रदान करें। एक संगीत शिक्षक इस व्यवसाय में तभी सफल हो सकता है जब उसमें निम्न गुण हो यथा नैसर्गिक, सैद्धांतिक, अनिवार्य।

नैसर्गिक–नैसर्गिक गुणों में शिक्षक की आकर्षक आवाज एवं क्रियात्मक प्रदर्शन की योग्यता है।

सैद्धांतिक–सिद्धांत गुणों में संगीत शिक्षा के लक्ष्य और उद्देश्यों का ज्ञान शिक्षण पद्धति जैसे गुरु शिष्य परंपरा या विद्यालय प्रणाली की शिक्षा का ज्ञान तथा विद्यार्थियों की समीक्षात्मक व विश्लेषणात्मक अध्ययन की योग्यता लिए हुए है।

संगीत के लिए अनिवार्यताएं– मौलिक तथा सैद्धांतिक योग्यताओं के अलावा व्यवसायिक संगीत शिक्षक में जो योग्यताएं होनी चाहिए वह निम्न है यथा सांगीतिक रुचि, मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि, सांगीतिक सौंदर्य व आलोचनात्मक दृष्टिकोण।

उपरोक्त सभी अनिवार्य योग्यताओं को रखने वाला सफल संगीत शिक्षक हो सकता है जो लोग संगीत व्यवसाय को प्रमुखता देते हैं वह स्वयं का संगीत विद्यालय भी खोल सकते हैं जहां वे पढ़ा सकते हैं तथा उनकी आय को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त कोचिंग कक्षाएं भी ली जा सकती है, जिसमें छात्रवृत्ति एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे संगीत नाटक अकादमी, एमएचआरडी कार्यक्रमों जैसे सारेगामापा विज्ञापनों हेतु आदि के लिए उचित प्रशिक्षण भी प्रदान कर सकते हैं इसके अतिरिक्त मंच प्रदर्शन के रूप में इस व्यवसाय को अपनाने के लिए कलाकार की कठिन साधना उचित शिक्षा प्रदर्शन के समस्त तत्वों से परिचित होना उचित श्रोतागण आदि का उचित समायोजन होना अति आवश्यक है।

आज वर्तमान में अनेक सामाजिक धार्मिक व सांस्कृतिक समारोह, मेलों इत्यादि पर भजन, गज़ल शास्त्रीय संगीत आदि के गायक–वादक व नर्तक अपनी कला कौशल का प्रदर्शन सभा मंडपों व अन्य स्थानों पर करते हैं। धार्मिक स्थलों पर धार्मिक भावना से भजन, कीर्तन करने वाले नियुक्त गायक–वादकों के लिए भी जीविकोपार्जन हेतु आवश्यक धनराशि निर्धारित होती है। इसके अतिरिक्त आज विभिन्न विवाह उत्सव कार्यक्रमों में जन्मदिन कार्यक्रम इत्यादि में भी गा–बजाकर जीविकोपार्जन कर रहे हैं।

संगीत चिकित्सा को वर्तमान समय में व्यावसायिक चिकित्सा के क्षेत्र में रोग निदान हेतु विश्वसनीय चिकित्सा के रूप में अपनाया जाना संगीत की सर्वव्यापकता को सिद्ध करता है। संगीत चिकित्सा में व्यवसाय की अपार संभावनाएं हैं किंतु संगीत चिकित्सा का उचित ज्ञान होना अति आवश्यक है। इस क्षेत्र की सीमाएं और भी विस्तृत क्षेत्र में प्रवेश कर सकें इसके लिए देश के विभिन्न संस्थाओं में यह एक विषय के रूप में होना चाहिए, जिसमें संगीत चिकित्सा से संबंधित कोर्स भी करवाये जाएं और संगीत चिकित्सा से जुड़े हुए शिक्षकों व अध्यापकों की नियुक्ति की जा सकें। संगीत चिकित्सा भी व्यवसाय का एक बड़ा माध्यम बन चुका है। इसके अतिरिक्त संगीत के अनेकों क्षेत्र हैं जिसमें संगीत की शिक्षा प्राप्त कर उसको व्यवसायिक दृष्टि से अपनाते हुए जीविकोपार्जन किया जा सकता है।

निष्कर्ष–

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि आज के समय में नौकरी की असीमित संभावनाएं हैं। बस जरूरत है कठिन परिश्रम, आत्मविश्वास, जागरूकता एवं संयम की। आज वर्तमान समय में संगीत जिज्ञासु गायक–वादक–नर्तक शिक्षक, लेखक, निर्देशक, प्रकाशक, प्रोग्रामर, शोधार्थी, अनुसंधानक,

कोरियोग्राफर, मंच प्रदर्शक, संगीत चिकित्सा इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों मे से किसी भी क्षेत्र को व्यावसायिक रूप में अपनाकर अपना भरण–पोषण कर सकते हैं। सभी को अपने–अपने क्षेत्र में स्तरीय कार्य करके साथ मिलकर शास्त्रीय संगीत की गरिमा को उच्च स्तर पर बनाए रखना है। यह स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों ही रूपों से इस कला में रोजगार की अनेकों संभावनाएं हैं परंतु अभी वर्तमान परिस्थितियां कुछ समय से बदल गई हैं। कोविड–19(कोरोना वायरस) ने जनमानस में उछाल सा दिया है। ऐसे में सभी का घर से बाहर जाना या आना मुश्किल हो गया है, जिसका प्रभाव संगीत रूपी कला व्यवसाय पर भी पड़ा है। सभी शिक्षण संस्थाएं बंद हो गई हैं। सभी कलाकार, शिक्षक घर में कैद की भांति हो गए हैं। ऐसे में संचार माध्यम ने संगीत के सभी कलाकारों शिक्षकों के जीवन में रंग भर दिया है और संचार के अनेकों माध्यम 'से नमस्ते' जैसे कई एप्स हैं जिनके माध्यम से घर बैठे सैकड़ों लोग आपस में जुड़ जाते हैं और एक दूसरे तक अपनी बातों को साझा कर पाते हैं। जहां पहले विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से संगोष्ठी, कार्यशाला, समारोह आयोजित किए जाते थे वे आज इंटरनेट संचार के माध्यम से वेबीनार के रूप में आयोजित किए जा रहे हैं जिसमें घर बैठे ही कलाकार, विद्वतजन, शिक्षकगण अपनी ज्ञान की धारा को विद्यार्थियों तक प्रवाहित कर पा रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

डॉ उषा सिंह संगीत शतायु प्रकाशन साहित्य संगम इलाहाबाद संस्करण 2013

डॉ सुरेश गोपाल श्रीखंडे हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली संस्करण 1993

जीतराम शर्मा आधुनिक व्यावसायिक हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन परंपरा व लक्षण संजय प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2004

डॉ पूनम दत्ता भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य राज पब्लिकेशंस नई दिल्ली संस्करण 2005